

महिला शक्ति

सदन में स्थान



संबोधित किया जा सकेगा। इससे राष्ट्र का भविष्य तय करने में महिलाओं के स्वर के बारे में शक्तिशाली संदेश जाता है तथा प्रशासन में उनका महत्वपूर्ण स्थान रेखांकित होता है। विधायी उपायों के साथ सभी विचारधाराओं वाली पार्टियों सक्रिय रूप से महिला मतदाताओं को प्रभावित करने वाले मुद्दों को संबोधित कर रही हैं। इनमें स्वास्थ्यरक्षा, शिक्षा, सुरक्षा और आर्थिक सशक्तीकरण शामिल हैं। वास्तव में आज महिलायें राजनीतिक प्रक्रिया में केवल निष्क्रिय दर्शक बने रहने से संतुष्ट नहीं हैं और वे सर्वोच्च स्तर पर स्थान चाहती हैं। इस सहभागिता से प्रशासन में नए दृष्टिकोण शामिल हुए हैं तथा ऐसे मुद्दों की प्राथमिकता बदली है जिनको लंबे समय से अनदेखा किया जा रहा था। इसके साथ ही जेंडर समानता तथा सामाजिक न्याय को प्रोत्साहन देने वाली नीतियों की पैरोकारी बढ़ी है। लेकिन इसके बावजूद भारतीय राजनीति में जेंडर समानता स्थापित करने में चुनौतियां बनी हुई हैं। गहराई तक जड़ें जमाए पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण, जेंडर पूर्वाग्रह तथा व्यवस्थागत बाधायें महिलाओं की सहभागिता और प्रतिनिधित्व में बाधायें बनी हुई हैं। इसके साथ ही अक्सर राजनीति में महिलाओं को उत्पीड़न, दबाव और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। इन मुद्दों को संबोधित करने के लिए नीति-निर्माताओं, राजनीतिक पार्टियों, सिविल सोसाइटी तथा आम जनता की ओर से निरंतर प्रयास जरूरी हैं ताकि महिला नेताओं के लिए समुचित परिवेश बन सके। जेंडर समानता सिद्धान्तों को स्वीकार कर भारत अपनी लोकतांत्रिक इच्छायें पूरी कर पूरी दुनिया के लिए अनुकरणीय समावेशी शासन-प्रशासन स्थापित कर सकता है।

२५ वर्गाषीय महिला टिक्स मन्त्रालय

(लेखिका, केन्द्रीय रेलवे
व टेक्सटाइल राज्य मंत्री
हैं)



तराणीय महिला दिवस मनाने के समय महिला सशक्तीकरण और विभिन्न क्षेत्रों में आज महिलाओं द्वारा की गई उल्लेखनीय प्रगति रेखांकित करना जरूरी है। इस बहुआयामी प्रगति में भारतीय महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। भारत विविधताओं से भरी संस्कृति व इतिहास वाला देश है जिसे बनाने व महिलाओं की उपलब्धियां व संघर्ष उल्लेखनीय हैं। पिछले वर्षों में भारत की महिलाओं ने बहुआयामी भूमिकायें निभाए हैं। उन्होंने राष्ट्र के विकास, आर्थिक प्रगति तथा समग्र रूप से अनेकानेव उपलब्धियों में अपना योगदान दिया है। भारत का इतिहास उन दृढ़ व अदम्य इच्छाशक्ति वाली महिलाओं से भरा पड़ा है जिन्होंने अनेक सामाजिक मानकों को तोड़ कर अपने लिए स्थान बनाया है।

इनमें ज्ञासा को रानी लक्ष्मीबाई सरोजनी नायदू तथा सवित्रीबाई फुले से लेकर पी.टी उषा तक अनेकानेव महिलायें शामिल हैं जिन्होंने मार्गदर्शक वे रूप में जेंडर समानता की नीव डाली है विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाली महिलाओं ने भारत को वर्तमान समय में ‘विश्व शक्ति’ बनाने में प्रमुख नेतृत्वकारी भूमिका अदा की है। महिलाओं ने देश वे सामाजिक ढांचे में महत्वपूर्ण योगदान करते हुए परिवारों, समुदायों और संस्थानों में उल्लेखनीय भूमिका अदा की है अतीत की नेतृत्वकारी महिलाओं से लेकर वर्तमान में विभिन्न क्षेत्रों में खोज महिलाओं ने भारतीय संस्कृति को हमेशा के लिए स्थाई रूप से बदल दिया है भारतीय महिलाओं ने न केवल देश कंसीमाओं के भीतर, बल्कि वैश्विक स्तर पर अपनी छाप छोड़ी है। अप्रणी बिजनेस प्रमुखों से लेकर वैज्ञानिकों, कलाकारों और एथलीटों तक भारतीय महिलाओं ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित की है। इससे उनको न केवल व्यापक स्तर पर सम्मान प्राप्त हुआ है, बल्कि उन्होंने नई पीढ़ी के लोगों को बड़े संपर्कों तक ले जाया है।

महिलाओं ने जहां शासन-प्रशासन के

हर क्षेत्र तथा सामाजिक-राजनीतिक ढांचे में प्रवेश कर स्वयं को स्थापित किया है। वहीं अब भी इन स्थितियों में सुधार की संभावना बनी हुई है। वास्तव में हमारे प्रधानमंत्री नेतृत्व में जीवन के हर क्षेत्र और सभी आयामों में जेंडर समानता स्थापित की जा रही है। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट रूप से परिभाषित किया है कि वे देश को कहां ले जान चाहते हैं। इसके लिए उन्होंने 'महिलाओं द्वारा संचालित विकास से महिला नेतृत्व में विकास' की अवधारणा प्रस्तुत की है। यह दृष्टिकोण में व्यापक बदलाव का संकेत है जिससे वर्तमान में प्राप्त उपलब्धियों के साथ ही भावी चुनौतियां भी रेखांकित हुई हैं। किसी भी समाज में जेंडर समानता का स्रर आमतौर से विकास और आधुनिकीकरण के स्तर से जुड़ा होता है। जेंडर समानता को प्रोत्साहित करने वाले समाजों में सबके लिए ज्यादा अवसर पैदा होते हैं। सामाजिक एकजुटता मजबूत होती है तथा भेदभाव का स्तर लगातार कम होता है। हालिया दशकों में महिला शिक्षा पर लगातार जोर देना एक सकारात्मक प्रवृत्ति के रूप में समझने आया है।

समतापूर्ण पहुंच की चुनौतियां हैं। इनके बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू की गई 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसी पहले ने लड़कियों की शिक्षा प्रोत्साहित करने में उल्लेखनीय केन्द्रीय भूमिका निभाई है। भारत के आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता 2022 में 22 प्रतिशत से बढ़ कर 2023 में 37 प्रतिशत पहुंच गई है। उद्यमिता के तेजी से बदलते परिवृश्य में महिलायें अपना स्थान बना रही हैं। महिलायें उल्लेखनीय नेतृत्वकारी भूमिका निभाते हुए खोजों में योगदान कर अनेक क्षेत्रों में परिवर्तन का कारण बन रही हैं। महिला उद्यमी अनेक क्षेत्रों में पुनर्गठन को बढ़ावा दे कर समावेशन को प्रोत्साहन दे रही हैं, भावी पीढ़ियों को प्रेरित कर रही हैं तथा स्थापित परंपरागत नियमों को बदल कर उद्योगों को पुनः परिभाषित भी कर रही हैं। महिलाओं ने अनेक मुनाफा कमाने वाली फर्में स्थापित की हैं।

महिलाओं का योगदान मुनाफा बढ़ाने से लेकर खोजों को प्रोत्साहित करने, समावेशन को बढ़ावा देने तथा सकारात्मक सामाजिक प्रभाव डालने में सफल हुआ है। टेक्सटाइल क्षेत्र में वर्तमान समय में 25 लाख से अधिक महिला बुनकर व सहायक कर्मियों के रूप में काम कर रही हैं। ये महिलायें न केवल उत्पादन के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान करती हैं, बल्कि उनका नेतृत्व भी कर-

ही हैं। इस प्रकार वे परंपराओं में जकड़े उद्योगों में आमूल परिवर्तन कर रही हैं। राजनीतिक संस्थानों में महिलाओं का बढ़ता प्रतिनिधित्व लोकतंत्र व समावेशन के प्रति प्रतिबद्ध देश के रूप में हमरी छवि बना रहा है। उच्च महिला राजनीतिक प्रतिनिधित्व वाले देश अक्सर नीति-निर्माण के प्रति ज्यादा संतुलित विविधतापूर्ण दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हैं तथा व्यापक रूप से सामाजिक मुद्दों का समाधान करने में सफल रहते हैं।

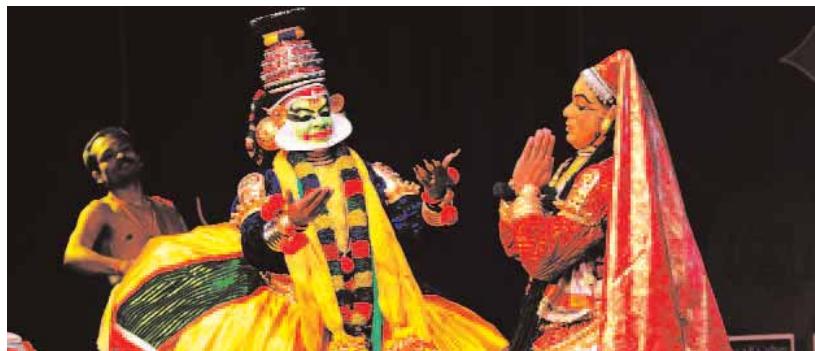
इस विचार को आगे बढ़ाते हुए 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम-महिला आरक्षण विधेयक' पेश किया गया जिसमें लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण का प्राविधान है। इससे हमारा लोकतंत्र और मजबूत होगा। हालांकि, पंचायत राज संस्थानों व नगर निकायों में महिलाओं की सहभागिता काफी बढ़ी है, पर राज्य विधायिकाओं और संसद में उनका प्रतिनिधित्व सीमित बना हुआ है। लोकसभा में महिला सांसदों की संख्या केवल 15 प्रतिशत है, जबकि यह अनेक राज्य विधानसभाओं में केवल 10 प्रतिशत है। नारी शक्ति वंदन कानून लागू होने के बाद लोकसभा में महिला सदस्यों की संख्या 181 हो जाएगी जो वर्तमान समय में 82 है। हालांकि, आज महिलायें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व कर रही हैं, पर यह स्वीकार करना जरूरी है कि भारतीय

रेलवे कार्यबल में महिलाओं की संख्या के बजाए 6-7 प्रतिशत है। इस कम प्रतिनिधित्व के बावजूद 'प्रथम महिलाओं' ने अनेक पुरुष-प्रभुत्व वाले क्षेत्रों में प्रशंसनीय रूप से प्रवेश किया है। ऐसी ही एक उल्लेखनीय महिला सुश्री जया वर्मा सिन्हा रेलवे बोर्ड की पहली अध्यक्ष व सीईओ हैं। इसके साथ ही भारतीय रेलवे में 800 से अधिक महिलायें लोको पायलेट, लोको पायलेट शंटर तथा सहायक लोको पायलेटों के रूप में काम करती हैं। कुछ ट्रेनों का संचालन पूरी तरह केवल महिलायें करती हैं जिससे उनकी क्षमता एवं दृढ़ता प्रकट होती है।

जब दुनिया ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया तब समाज के ऐसे वर्ग पर नजर डालना जरूरी हो गया है जिसके योगदान को अक्सर 'बेरोजगार महिला' बता कर अनदेखा किया जाता है। घर-परिवार में महिलायें अनेकानेक दायित्वों व कर्तव्यों का निर्वहन करती हैं जो परिवार, समाज और देश के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे परिवार में अपने बच्चों के पालन-पोषण के साथ ही बृद्धों की देखभाल, बच्चों की शिक्षा, घर के आर्थिक प्रबंधन तथा भावी प्रगति की योजनायें बनाने में जो भूमिका निभाती हैं वे किसी कामकाजी महिला से कम नहीं हैं। इसके साथ ही अनेक महिलायें स्वरोजगार या नौकरी के माध्यम से परिवार, समाज और देश की आर्थिक प्रगति में उल्लेखनीय योगदान करती हैं। हालांकि, बेरोजगारी की समस्या बनी हुई है, पर इससे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान करने वाली महिलाओं का महत्वपूर्ण प्रभाव कम नहीं हो जाता है।

भारत में माहला सशक्तीकरण में प्रगति का उत्सव मनाते हुए हमें यह अवश्य स्वीकार करना चाहिए कि यह यात्रा जारी है। सरकार, सिविल सोसाइटी तथा जनता के सामूहिक प्रयास सार्थक व स्थाई परिवर्तन प्राप्त करने के लिए जरूरी हैं। महिला सशक्तीकरण का अर्थ केवल समानता तक सीमित नहीं है। यह टिकाऊ विकास, सामाजिक प्रगति तथा समाज की समग्र बेहतरी के लिए आधारभूत शर्त है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने महिलाओं के बारे में कहा है, 'वह शक्ति है, सशक्त है, वह भारत की नारी है, न ज्यादा में, न कम में, वह सब में बराबर की अधिकारी है।' प्रधानमंत्री के इस विद्वतापूर्ण विचार पर सबको गौर करना चाहिए।

महिलाओं द्वारा प्रोप्रित सांस्कृतिक परम्पराएं



धर्मग्रंथों और ग्रंथों से होती है, जो पौराणिक कथाओं, महाकाव्यों और लोककथाओं की कहानियों को व्यक्त करने के माध्यम के रूप में कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए, भरतनाट्यम् की जड़ें नाट्य शास्त्र में मिलती हैं, जो ऋषि भरत मुनि द्वारा प्रस्तुत कला प्रदर्शन पर एक ग्रंथ है। इसी तरह, कथक की उत्पत्ति हिंदी शब्द कथा से हुई है और यह महाभारत और रामायण जैसे हिंदू धर्मग्रंथों से कहानी कहने के माध्यम के रूप में विकसित हुआ है। इस प्रकार, प्रत्येक नृत्य शैली एक अद्वितीय इतिहास रखती है, जिसमें क्षेत्रीय विविधताएं देश के विविध सांस्कृतिक परिदृश्य को जोड़ती हैं, जो अक्सर प्रतिभासाली महिलाओं की रचनात्मक अभिव्यक्तियों द्वारा आकार और कायम रहती हैं जो इन परंपराओं की पथप्रदर्शक रही हैं।

राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के लिए इन नृत्य शैलियों को संरक्षित करना महत्वपूर्ण है। ये कला रूप केवल प्रदर्शन से कहीं अधिक काम करते हैं, वे भारतीय विरासत, नैतिकता और आध्यात्मिक विश्वासों के जीवंत भंडार हैं। विस्तृत हाथ की हरकतें, चेहरे के भाव और शरीर की हरकतें उन कहानियों को बयान करती हैं जो

हैं। अपने सांस्कृतिक महत्व के अलावा, ये नृत्य कलाकारों को खुशी और उत्सव से लेकर दुःख और आत्मनिरीक्षण तक भावनाओं की एक विस्तृत श्रृंखला व्यक्त करने में भी सक्षम बनाते हैं। जटिल फुटवर्क, सुंदर चाल और अधिव्यंजक हावभाव कलाकारों को एक ऐसी दुनिया में चुपचाप जटिल कथाओं और धावनाओं को संप्रेषित करने की अनुमति देते हैं जो विकसित हो रही है लेकिन अभी भी परंपरा में गहराई से निहित है। शायद सांस्कृतिक पहचान के साथ यह गहरा संबंध ही है जिसने

के विविध स्पेक्ट्रम का अनुभव करने के लिए स्वागत किया गया है। कलात्मक अधिव्यक्ति का साधन होने के अलावा, नृत्य रूपों में समावेशित और समझ को बढ़ावा देकर सामाजिक अंतराल को पाटने की क्षमता भी है। इन नृत्य रूपों द्वारा समर्थित विविधता, एकता, प्रेम, खुशी, दुःख, करुणा और सांप्रदायिक सद्ग्राव के विषयों का उपयोग क्षेत्रीय, भार्वाई और धर्मांक सीमाओं से परे एक सज्जा सांस्कृतिक समझ बनाने के लिए किया जा सकता है। बदले में, उन्नत सांस्कृतिक एकीकरण, भारतीय समाज का निर्माण करने वाले विविध समुदायों के बीच एकता और पारस्परिक सम्मान की भावना को बढ़ावा देने में मदद करेगा।

की आवश्यकता है। शायद इन नृत्य रूपों को बढ़ावा देने और उनमें फिर से रुचि जगाने की इच्छा ने हमें टूटस 2 रूट्स पर भरतनाट्यम्, कथक और नौमोडिली से शुरू होने वाले विभिन्न नृत्य रूपों के लिए आँनलाइन नृत्य पाठ्यक्रम आयोजित करने के लिए प्रेरित किया है। दुनिया भर के 60 द्रुतावासों के मध्य-साथ भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद आईसीसीआर), सांस्कृतिक संसाधन और विशिष्टकाण्ड केंद्र (सीसीआरटी) के सहयोग से शुरू किए गए इस मिशन का उद्देश्य दुनिया भर में नृत्य रूपियों को एक विशेष अवसर प्रदान करना है।

भारतीय शास्त्रीय नृत्य रूपों में निहित लयबद्ध चीडियायों, पारंपरिक आख्यानों और कहानी कहने वाले तत्वों में खुद को डुबो दें। इसके अधिकांश मर्मथर्क और अभ्यासकर्ता महिलाएं होने के कारण, उस पहल का उद्देश्य उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति का लिए एक मंच प्रदान करना भी है। जैसा कि हम महिला दिवस मनाते हैं, भारतीय शास्त्रीय नृत्य रूपियों को संरक्षित करने का महत्व अतिरिक्त है। इन्हें रहत्व रखता है। यह राष्ट्र की आत्मा में एक अपर्णात्मिक निवेश के रूप में खड़ा है। हमारे नृत्य रूप और देश की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक

पूरुषवादी सोच

साल में एक दिन महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है। उस दिन महिलाओं की प्रशंसा में जमकर शब्दों की जुगाली की जाती हैं। उस दिन महिलाओं के लिए बराबरी का दर्जा से लेकर उन्हें और ऊपर तक उठाने की पेरवी की जाती है। लेकिन अगले दिन से पिछे दुनिया पहले की तरह चलने लगती है। विश्व की 50 प्रतिशत से अधिक महिलाएं वही चूल्हा-चौका, बच्चों की परिश, घर संभालने की जिम्मेदारी और परिवार के बयोबूद्धों की देखभाल में जुट जाएंगी। जैसे जैसे जमाना विकास की ओर बढ़ रहा है, वैसे वैसे महिलाओं को संसार में सुख पूर्वक जीने के संसाधन उपलब्ध हो रहे हैं। लेकिन पुरुषवादी सोच सुदूर गांवों से लेकर अति विकसित देशों के शहरों तक आज भी जारी है। भले ही मुझी भर महिलाएं सफलता के शिखर चूमने में सफल रही हों, मगर इस आधी आबादी का एक बड़ा हिस्सा आज भी बराबरी का दर्जा पाना तो दूर अभी अपने जीवन यापन के लिए ही संघर्ष कर रहा है। खासकर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में खेतों, ईंट भट्टों व भवन निर्माण आदि क्षेत्रों में काम करने वाली महिलायें भयंकर दमन और शोषण का शिकार हैं। संदेशखाली जैसी छोटी-बड़ी घटनायें शायद देश के अन्य भागों में भी पुरुषवादी सोच के कारण होती हैं, पर उनको सुर्खियों में जगह नहीं मिलती है।

-सुभाष बुद्धावन वाला, रतलाम

आधी आबादी का महत्व

महिला इस समाज में आधी आबादी और उस पहिए की भाँति है जिसके बिना जीवन की गाढ़ी चलना असंभव है। अब खुशी की बात है कि अब समाज के पुरुषवादी एवं रूढिवादी तबके को भी समझ में आने लगा है कि महिला के बिना इस जीवन की कल्पना करना भूल ही नहीं, हमारी अज्ञानता का परिचयक था। घर की चारदिवारी और चूर्छे चौके तक सीमित रखे जाने व वासना पूर्ति का साधन समझे जाने वाली अनेक महिलाएं और बेटियां समाज के लिए वरदान साबित हो रही हैं। आज राष्ट्र निर्माण के विभिन्न क्षेत्रों में महिलायें परचम लहरा रही हैं और अपना योगदान दे रही हैं। आज महिलायें पुलिस, तीनों सेनाओं, इंजीनियरों, अभिनेत्रियों, चिकित्सकों, वन संरक्षकों, शिक्षिकाओं, वैज्ञानिकों, आदि के रूप में योगदान कर अपनी शक्ति व क्षमता का प्रदर्शन कर रही हैं। वे समाज को मजबूर कर रही हैं कि उनको समान दर्जा दिया जाए। विधायिकाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण का कानून एक वरदान है। सबको महिलाओं और बेटियों को सम्मान देते हुए उनको अपने अधिकार, पेशा, नौकरी, शिक्षा व कैरियर के लिए स्वतंत्रता देनी चाहिए। जीवन के सभी क्षेत्रों में आधी आबादी को कम से कम आधा स्थान जरूर मिलना चाहिए।

भयभीत ममता बनर्जी

ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली राज्य सरकार संदेशखाली मामले में आरोपी शाहजहां मामले की जांच हाई कोर्ट द्वारा सीबीआई को देने के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाने जा रही है। इसके लिए कांग्रेस के वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी की सहायता ली जाएगी। आखिर ममता बनर्जी यह सब क्यों कर रही है? शाहजहां ने सन्देशखाली में महिलाओं का यौन उत्पीड़न किया, उनकी जमीनें हड्डीये, केन्द्र सरकार द्वारा गरीब जनता के लिए निर्धारित योजनाओं का पैसा हड़पा तथा घोटाले की जांच करने वाली टीम पर प्राणघातक हमला करगया। उसे हाईकोर्ट के बाद गिरफ्तार किया गया ममता सरकार कह रही उसकी जांच प्रदेश में है चाहिए। पूरे प्रकरण से सक्षम कि राज्य सरकार एक अपराधी को संरक्षण दे आखिर ममता बनर्जी इतने क्यों रही हैं? कहा जाता शाहजहां शेख टीएमसी अल्पसंख्यक वोटबैंक ठेकेदार है और वह पांच खजाना भी भरता रहा सीबीआई और ईडी के उसके खुलासे ममता बनर्जी उनकी पार्टी का भविष्य सुझाल सकते हैं। राजनीति से ममता-विरोधी यह मौका से जाने नहीं देना चाहते हैं।

युवाओं से ठगी

सहायक की नौकरी दिलवाने के नाम पर भारतीय युवाओं को रूस में ले जाकर युद्ध में लड़ने के लिए धकेल देना हैरान करने वाली दुखद घटना है। इससे पूर्व रोजगार दिलवाने के नाम पर खाड़ी देशों में भारतीय नागरिकों को विशेष तौर से महिलाओं को ले जाकर वहाँ उनसे मनमाने कार्य लिए जाने की खबरें सामने आती रही हैं। इनमें यौन शोषण, मारपीट व अन्य तरह से परेशान करने की घटनाएं शामिल हैं। ऐसी घटनाओं को देखते हुए भारत सरकार के साथ राज्य सरकारों को भी विदेश में रोजगार के नाम पर जाने वाले सभी नागरिकों और उन्हें वहाँ ले जाने वाली एजेंसी की प्रामाणिकता की अच्छी तरह से जांच पड़ताल के बाद ही विदेश जाने की अनुमति मिलनी चाहिए। इजराइल भेजे गए हजारों नौजवानों के मामले में उत्तर प्रदेश और हरियाणा सरकार ने इजराइल सरकार के कर्मचारियों के साथ मिल कर समुचित व्यवस्था की है। इसका अनुसरण किया जाना चाहिए। देश के नागरिकों को भी अधिक वेतन के लालच में ठांगों के जाल में फँसने से बचना चाहिए तथा यथासंभव देश में ही काम तलाशना चाहिए।

- विभूति बुपक्या, खाचरोद

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से response@mail.bindisincar@gmail.com

il.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

सरकार की नीतियों व योजनाओं में महिलाएं केंद्र बिंदु: योगी

महायोगी गोरखनाथ विवि में निशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को सीएम ने दिया सिलाई मरीन का उपहार

पायनियर समाचार सेवा | लखनऊ/गोरखपुर

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि डबल इंजन सरकार की नीतियों और योजनाओं में महिलाएं केंद्र बिंदु हैं। केंद्र और प्रदेश सरकार जिनी भी जनकल्पकारी योजनाओं का संचालन कर रही हैं, उनमें सर्वाधिक संख्या उन योजनाओं की है जिनका सीधा प्रभाव महिलाओं पर पड़ता था। सरकार और समाज के लिए महिला सुक्ष्मा, सम्मान और स्वावलंबन सर्वोपरि होना चाहिए। सरकार इस दिशा में पूरी प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है। इसी प्रतिबद्धता से महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय भी महिलाओं के समान-स्वावलंबन के लिए सराहनीय योगदान दे रहा है।

सीएम योगी शुक्रवार शाम महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के सीधन्य से आयोजित सात दिवसीय निशुल्क



इसके लिए सुरक्षा का वातावरण देकर महिलाओं के स्वावलंबन का मार्ग प्रशस्त करना होगा।

सीएम योगी ने कहा कि 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद मोदी जी ने व्याक्रिति, मर, मजहब या शेरी को योजनाओं का आधार नहीं बनाया। बल्कि योजनाओं का आधार गांव, गरीब, कियान, महिलाओं को बनाया गया। उन्होंने कहा कि बेटी बच्चों-बेटी पहाड़ों और मातृ बन्दन सीधे महिलाओं के सुक्ष्मा, सम्मान और स्वावलंबन से जुड़ी हैं तो शौचालय, उज्जला, सौभाग्य और सुन्नत राशन जैसी योजनाओं के केंद्र भी महिलाएं हैं क्योंकि यह परिवार में अभाव होता है। सभी योजनाओं के लिए सरकार ने महिलाओं की सुक्ष्मा, सम्मान और स्वावलंबन करने के लिए अधिक विकल्प महिलाओं को आधिकारिक बनाने के लिए निशुल्क सिलाई कढ़ाई प्रशिक्षण शिविर के आधारन तथा मुफ्त सिलाई मरीन वितरण के इस कार्यक्रम की समराहना की। उन्होंने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परंपरागत पाठ्यक्रमों के संचालन करने के साथ गतिविधियों का केंद्र बन गया है। किसी भी संस्था की उपायोदयता के लिए समाज के सापेक्ष बने रहना जरूरी है। यह विश्वविद्यालय इस जिम्मेदारी को पूरी तरह समझ और निभा रहा है। इस विश्वविद्यालय में महिलाओं की आधी आवादी की अतिरिक्तर्थी महिलाओं के प्रेरित करने हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि आधी आवादी के सशक्तिकरण के बिना भारत को सशक्त और समर्थ नहीं बनाया जा सकता है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विवि में निशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को सीएम ने दिया सिलाई मरीन का उपहार

सामुहिक विवाह जैसी योजनाएं चलाई हैं। छात्रों के साथ छात्राओं को स्मार्टफोन उपलब्ध कराकर उन्हें तकनीकी रूप से सक्षम बनाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने

महिलाओं के स्वावलंबन का मार्ग प्रशस्त करना होगा।

सीएम योगी ने कहा कि 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद मोदी जी ने व्याक्रिति, मर, मजहब या शेरी को योजनाओं का आधार नहीं बनाया। बल्कि योजनाओं का आधार गांव, गरीब, कियान, महिलाओं को बनाया गया। उन्होंने कहा कि बेटी बच्चों-बेटी पहाड़ों और मातृ बन्दन सीधे महिलाओं के सुक्ष्मा, सम्मान और स्वावलंबन से जुड़ी हैं तो शौचालय, उज्जला, सौभाग्य और सुन्नत राशन जैसी योजनाओं के केंद्र भी महिलाएं हैं क्योंकि यह परिवार में अभाव होता है। सभी योजनाओं के लिए सरकार ने महिलाओं की सुक्ष्मा, सम्मान और स्वावलंबन करने के लिए अधिक विकल्प महिलाओं को आधिकारिक बनाने के लिए निशुल्क सिलाई कढ़ाई प्रशिक्षण शिविर के आधारन तथा मुफ्त सिलाई मरीन वितरण के इस कार्यक्रम की समराहना की। उन्होंने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परंपरागत पाठ्यक्रमों के संचालन करने के साथ गतिविधियों का केंद्र बन गया है। किसी भी संस्था की उपायोदयता के लिए समाज के सापेक्ष बने रहना जरूरी है। यह विश्वविद्यालय के इस जिम्मेदारी को पूरी तरह समझ और निभा रहा है। इस विश्वविद्यालय में महिलाओं की आधी आवादी के अतिरिक्तर्थी महिलाओं के प्रेरित करने हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि आधी आवादी के सशक्तिकरण के बिना भारत को सशक्त और समर्थ नहीं बनाया जा सकता है।

सीएम योगी आदित्यनाथ ने विवि में निशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को सीएम ने दिया सिलाई मरीन का उपहार

सामुहिक विवाह जैसी योजनाएं चलाई हैं। छात्रों के साथ छात्राओं को स्मार्टफोन उपलब्ध कराकर उन्हें तकनीकी रूप से सक्षम बनाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने

गैस सिलेंडर की कीमत में 100 रुपए की छूट पर सीएम योगी ने पीएम मोदी का जताया आभार

● मुख्यमंत्री ने बताया मातृत्वित का सम्मान और पर्यावरण को संरक्षित

करने वाली लोक-कल्याणकारी सौगत

पायनियर समाचार सेवा | लखनऊ

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर एलपीजी गैस सिलेंडर की कीमतों में 100 रुपए की छूट के नियंत्रण पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेशवासियों की ओर से अप्रधानमंत्री मोदी की आधार व्यक्ति है। अपने एक्स अकाउंट पर लिखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस फैसले को मार्गशिरि का सम्मान और पर्यावरण को संरक्षित करने वाली लोक-कल्याणकारी सौगत बताया है।

सीएम योगी आदित्यनाथ ने विवि में निशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को सीएम ने दिया सिलाई मरीन का उपहार

मोदी कैबिनेट द्वारा शुक्रवार को केंद्रीय मंत्रियों के महांगाई भरते (डी) और प्रेसिनर्स की महांगाई राहत (डीआर) की अतिरिक्त किसिस के मंजूरी दी गई है। इसके

तात्पर्य मूल वेतन-पैसेन की 4G लाख रुपए की अतिरिक्त किसिस के मंजूरी दी गई है। इसके

प्रधानमंत्री मोदी की आधार व्यक्ति है। अपने एक्स अकाउंट पर लिखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस फैसले को मार्गशिरि का सम्मान और पर्यावरण को संरक्षित करने वाली लोक-कल्याणकारी सौगत बताया है।

सीएम योगी आदित्यनाथ ने विवि में निशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को सीएम ने दिया सिलाई मरीन का उपहार

मोदी कैबिनेट द्वारा शुक्रवार को केंद्रीय मंत्रियों के महांगाई भरते (डी) और प्रेसिनर्स की महांगाई राहत (डीआर) की अतिरिक्त किसिस के मंजूरी दी गई है। इसके

तात्पर्य मूल वेतन-पैसेन की 4G लाख रुपए की अतिरिक्त किसिस के मंजूरी दी गई है। इसके

प्रधानमंत्री मोदी की आधार व्यक्ति है। अपने एक्स अकाउंट पर लिखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस फैसले को मार्गशिरि का सम्मान और पर्यावरण को संरक्षित करने वाली लोक-कल्याणकारी सौगत बताया है।

सीएम योगी आदित्यनाथ ने विवि में निशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को सीएम ने दिया सिलाई मरीन का उपहार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विवि में निशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को सीएम ने दिया सिलाई मरीन का उपहार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विवि में निशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को सीएम ने दिया सिलाई मरीन का उपहार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विवि में निशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को सीएम ने दिया सिलाई मरीन का उपहार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विवि में निशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को सीएम ने दिया सिलाई मरीन का उपहार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विवि में निशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को सीएम ने दिया सिलाई मरीन का उपहार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विवि में निशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को सीएम ने दिया सिलाई मरीन का उपहार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विवि में निशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को सीएम ने दिया सिलाई मरीन का उपहार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विवि में निशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को सीएम ने दिया सिलाई मरीन का उपहार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विवि में निशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को सीएम ने दिया सिलाई मरीन का उपहार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विवि में निशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को सीएम ने दिया सिलाई मरीन का उपहार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विवि में निशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को सीएम ने दिया सिलाई मरीन का उपह

